उमेश चन्द्र पाठक (प्रवक्ता)
रा0इ0का0पांखू
पिथौरागढ़।

लोकतांत्रिक व्यवस्था का संकट कक्षा–12

आपातकाल– आपातकाल में शक्तियों के बंटवारे का संघीय ढांचा व्यवहारिक रूप से निष्प्रभावी हो जाता है। और सारी शक्तियां केन्द्र सरकार के हाथ में चली जाती है। सरकार नागरिको के मौलिक अधिकारों पर भी रोक लगा सकती है।

भारतीय संविधान में आपात कालीन प्रावधान–

1. अनुच्छेद 352 के तहत युद्ध या वाह्य आक्रमण अथवा सशस्त्र विद्रोह पर आपातकाल।
2. अनुच्छेद 356 के तहत राज्यों में संवैधानिक तंत्र के असफल हो जाने की स्थिति में आपातकाल।
3. अनुच्छेद 360 के तहत पूरे देश या उसके किसी भाग में आर्थिक स्थिति या साख खतरे में होने पर आपातकाल।

भारत में आपातकाल– 25 जून, 1975 की रात में प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गॉधी ने राष्ट्रपति फखरूद्दीन अली अहमद से आंतरिक अशांति के आधार पर आपातकाल लागू करने की सिफारिश की। राष्ट्रपति ने तुरन्त यह उद्घोषणा कर दी, मंत्रीमण्डल को यह सूचना अगले दिन दी गयी।

आपातकाल के कारण– सरकार ने विरोधी दलों के आन्दोलन को दबाने के लिए 25 जून, 1975 को आपातकाल की घोषणा कर दी जिसके निम्नलिखित कारण बताये गये–

1. आपातकालीन स्थिति की घोषणा संविधान के अनुच्छेद 352 के अन्तर्गत की गयी जिसमें आन्तरिक गड़बड़ी के कारण आपात स्थिति की घोषणा की बात कही गई हैं।
2. सरकार का कहना था कि चुनी हुई सरकारो को काम नहीं करने दिया जा रहा था।
3. देश में जगह–जगह आन्दोलन व धरनों का आयोजन हो रहा था।
4. देश के अनेक भागो में आन्दोलनों के कारण हिंसक घटनाऐं हो रही थीं।
5. सेना व पुलिस को बगावत और विद्रोह के लिए उकसाया जा रहा था।

6. साम्प्रदायिकता उन्माद को बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा था।
7. राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को खतरा उत्पन्न हो रहा था।
8. राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न करने का प्रयास किया जा रहा था।
9. कानून के शासन को खतरा उत्पन्न हो गया था।
10. अर्थव्यस्था का संकट गहरा गया था।

आपातकाल के प्रभाव–आपातकाल की स्थिति की घोषणा के पश्चात् तत्काल प्रभाव निम्नलिखित हुए–

1. नागरिकों के मौलिक अधिकार स्थगित कर दिये गये।
2. देश का संघात्मक ढांचा एकात्मक रूप में बदल गया।
3. सभी प्रकार के धरना,प्रदर्शन, हड़ताल पर पाबन्दी लगायी गयी।
4. निवारक नजरबंदी कानून को लागू कर दिया गया।
5. सभी विषयों पर संसद को कानून बनाने का अधिकार प्राप्त हो गया।
6. पूरे देश का शासन राष्ट्रपति के हाथ में आ गया।

आपातकाल की घटनाऐं– आपातकाल लगते ही जय प्रकाश नारायण सहित प्रमुख विपक्षी नेताओं को गिरफ्तार कर दिया गया, प्रेस पर सेंसरशिप लगा दी गयी। कोई भी समाचार सरकार की इच्छा से ही छप सकता था। सरकार का रूख कठोर हो गया था, पूरे देश से निवारक नजरबंदी के तहत बहुत सारे लोगो को मात्र अपराध की आंशका से गिरफ्तार कर दिया गया।

आपातकाल के खिलाफ पूरे देश में विरोध प्रदर्शन हुए जिन विपक्षी नेताओं की गिरफ्तारी नहीं हो पायी उन्होनें भूमिगत रहकर आपातकाल का विरोध किया। सेंसरशिप के बावजूद कई अखबारों ने भी आपातकाल का कड़ा विरोध किया।

1977 का लोक सभा चुनाव– लगभग 21 महीने के आपातकाल के बाद 1977 में लोकसभा चुनाव हुए इन चुनावों में गैर कांग्रेसी पार्टियों ने मिल कर जनता दल का निर्माण किया। इस चुनाव में जनता दल को बहुमत मिला उसे 542 में से 330 सीटें प्राप्त हुई जबकि कांग्रेस को 154 सीटें ही मिली।

मोरारजी देसाई के रूप में देश को पहला गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री मिला।

जनता दल सरकार– जनता दल को बहुमत मिलते ही नेताओं के बीच प्रधानमंत्री के पद के लिए होड़ मची इस होड़ में मोरारजी देसाई आगे रहे। सत्ता की आपसी खीचतान से यह सरकार ज्यादा नहीं चल पायी मोरारजी देसाई की जगह कांग्रेस पार्टी के समर्थन से चौधरी चरण सिंह प्रधानमंत्री बने लेकिन 4 महीने बाद ही कांग्रेस के समर्थन वापस लेते ही यह सरकार गिर गयी।

1980 के लोक सभा चुनाव–

जनता दल की सरकार की असफलता के बाद 1980 में लोकसभा चुनाव हुए इन चुनावों में कांग्रेस पार्टी ने भारी सफलता प्राप्त की और श्रीमती इंदिरा गांधी ने पुनः सत्ता में वापसी की। 1980 के चुनावों में लोकतान्त्रिक राजनीति का एक और सबक सिखाया सरकार अगर अस्थिर हो और उसके भीतर कलह हो, तो मतदाता ऐसी सरकार को कड़ा दण्ड देते है।

बिहार आन्दोलन– बिहार आन्दोलन जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व में 1974 में चलाया गया था। बिहार आन्दोलन शासन में भ्रष्टाचारी एवं अयोग्य कर्मचारियों के विरूद्ध चलाया गया था। इस आन्दोलन को पूर्ण या व्यापक क्रान्ति भी कहा जाता है। जयप्रकाश नारायण ने 1975 में बिहार के लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा था कि बिहार आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य समाज एवं व्यक्ति के सभी पक्षों में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन लाना है। यह उद्देश्य ऐसा नहीं है, जिसे एक दिया या एक वर्ष में प्राप्त कर लिया जाय। बल्कि अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हमें दीर्घकाल तक बिहार आन्दोलन जारी रखना होगा। बिहार आन्दोलन में अनुसूचित जनजातियों एवं जनजातियों की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं को भी हल करने का प्रयास किया गया।

गुजरात आन्दोलन– जनवरी, 1974 में गुजरात के छात्रों ने खाद्यान्न, खाद्य तेल तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं की बढ़ती हुई कीमत तथा उच्च पदो पर जारी भ्रष्टाचार के विरूद्ध आन्दोलन छेड़ दिया छात्र आन्दोलन में बड़ी राजनीतिक पार्टिया भी शामिल हो गयी और इस आन्दोलन ने विकराल रूप धारण कर लिया। ऐसे में गुजरात में राष्ट्रपति शासन लगा दिया। विपक्षी दलों ने राज्य की विधानसभा के लिए पुनः चुनाव कराने की मांग की। 1975 के जून, में विधानसभा के चुनाव हुए कांग्रेस इस चुनाव में पराजित हो गयी।

अन्त्योदय कार्यक्रम– 1977 में केन्द्र में जनता पार्टी सत्ता में आई। एक गैर कांग्रेसी दल पहली बार केन्द्र में सत्ता में आया था। इस दल ने जन कल्याण के लिए अपने नए–नए कार्यक्रम जनता के समक्ष रखे। 'अन्त्योदय' उनमें से एक था। यह एक गांधीवादी विचार था जो भारत की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए अपनाया गया था।

अभ्यास कार्य

प्रश्न–1. सम्पूर्ण क्रान्ति के प्रणेता कौन थे ?

उत्तर– सम्पूर्ण क्रान्ति के प्रणेता जयप्रकाश नारायण थे।

प्रश्न–2. इन्दिरा इज इण्डिया, इण्डिया इज इंदिरा का नारा किसने दिया था।

उत्तर– देवकान्त बरूवा।

प्रश्न–3. जनता पार्टी की स्थापना कब हुई।

उत्तर– 1977

प्रश्न–4. केशवानन्द भारती मुकदमे का निर्णय किस वर्ष हुआ।

उत्तर– 1973

प्रश्न–5. जनता पार्टी के चार नेताओं के नाम लिखिये।

उत्तर–मोरारजी देसाई, चौधरी चरण सिंह, जयप्रकाश नारायण, अटल बिहारी वाजपेयी ।

आदर्श प्रश्न

प्रश्न–1. आपातकाल से आप क्या समझते है ? 1975 के आपातकाल के परिणामों का वर्णन कीजिये।

प्रश्न–2. 1980 के मध्यावधि चुनाव के कारण लिखिये ?

प्रश्न–3. जनता दल सरकार की असफलता के क्या कारण रहे ?

प्रश्न–4. बिहार आन्दोलन से आप क्या समझते है?

प्रश्न–5. गुजरात आन्दोलन 1974 के क्या कारण थे ?

प्रश्न–6. आपातकाल के क्या कारण थे, इसके प्रभाव क्या हुए ?

संदर्भ व सहायक पुस्तकें–

1. विद्यालयी शिक्षा उत्तराखण्ड द्वारा प्रकाशित स्वतन्त्र भारत में राजनीति कक्षा–12 की पाठ्य पुस्तक।
2. चित्रा प्रकाशन, इण्डिया प्रा0लि0 द्वारा प्रकाशित चित्रा राजनीति शास्त्र कक्षा–12 लेखक शरद भटनागर।